च nach नीयमानम्. — S. 180. Z. 18, 19. म्रहो — समुद्धाते fehlt in der B. A. — S. 180. Z. 21. तान्प्राह st. म्रघ तानवद्त्. — S. 181. Z. 3. ततस् st. ततम् . — S. 182. Z. 3. म्रन्विष्यम् st. म्रन्विष्यम् — S. 182. Z. 8. स fehlt in der B. A. — S. 182. Z. 1. v. u. म्रतस् st. ततस्, एव fehlt in der B. A. — S. 183. Z. 1, 2. Die B. A. schreibt hier und anderwärts इत्समये zusammen, यद्या कर्तव्यम् dagegen wird getrennt. — S. 183. Z. 10. म्रिप fehlt in der B. A. Vgl. zu S. 181. Z. 5. — S. 185. Z. 18. तथू तैनीता st. नीता धूर्तस्. — S. 186. Str. 2. a. Schlegel und Lassen stossen च, das sich in den Ausgaben und Handschriften findet, aus. — S. 186. Z. 17. नाथ fehlt in der B. A. — S. 187. Str. 5. a. एव st. एतास्. — S. 187. Z. 16. तथेव (schon von Lassen gutgeheissen) st. तथा, म्रसी fehlt in der B. A. — S. 188. Z. 11, 12. तमुपकार्यम् st. तड्यकार्म्.

VI. 39 STROPHEN AUS AMARŪ-ÇATAKA.

Str. 4. Die Scholien: म्रलसमालस्यं। तेन विलितस्तत्संपृक्तैः। प्रेमाईाईः प्रेमातिशयस्त्रिग्धेः । मुऊर्वारं वारं। मुकुलितैः (sic) संकुचितैः। — वम-द्विरुदिरिव।

Str. 5. Die Scholien: बालां मानिनीं वर्णयत्नारु दत्त इत्यादि। चतुरा साबी वदित । के नििह्मंश के निःशङ्क । तावत्साबी रेादितु। विमुत्तकाठं च तत्करूणं च इति यथा स्यात् तथा। कथमित्याक् । अस्याः प्रणयः प्रेमा- प्रयस्तयैव दत्तः । भवतेव इयं चिरं लालिता वर्धिता । अस्य देवादेवयोगा-